Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095
doi : https://doi.org/10.32628/GISRRJ

डॉ० ए.पी.जे अब्दुल कलाम का शैक्षिक दर्शन

डॉ० पारुल मिश्रा
विभागाध्यक्षा शिक्षाशास्त्र विभाग, एन.ए.के.पी.पी.जी. कॉलेज, फरुखाबाद,उ.प्र.

Article Info
Volume 8, Issue 2
Page Number : 135-139

Publication Issue :
March-April-2025

Article History
Accepted : 05 April 2025
Published : 24 April 2025

शोधसारांश– मिसाइलमैन के नाम से जाने जाने वाले डॉ. ए.पी. जे अब्दुल कलाम ने एक ऐसा इतिहास रचा कि सम्पूर्ण देश ही उन्हें अपना आदर्श मानने लगा। 15 अक्टूबर 1931 को जन्मे डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पहले और एक मात्र ऐसे वैज्ञानिक थे, जिन्होंने वैज्ञानिक के साथ–साथ एक नेता के रूप में भी अपना परिचय दिया। वह भारत के ऐसे पहले वैज्ञानिक थे जो राष्ट्रपति पद पर आसीन हुए। वे देश के ऐसे तीसरे राष्ट्रपति थे जिन्हें राष्ट्रपति बनने से पूर्व भारतरत्न से सम्मानित किया गया था। इसके साथ ही बह एकमात्र ऐसे राष्ट्रपति हैं जिन्होंने अजीवन अविवाहित रहकर देश सेवा का व्रत लिया था। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को आज के छात्र युवा अपना आदर्श मान उनके विचारों से प्रेरित होते हैं।

जहाँ वैज्ञानिक के रूप में डॉ० ए० पी० जे अब्दुल कलाम ने भारत को मिसाइलों और आधुनिक हथियारों के क्षेत्र में स्वावलम्बी बनाने का बीड़ा उठाया। अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये उन्होंने प्रतिभाओं को खोज 280 वैज्ञानिकों का एक छल बनाया। अग्नि, पृथ्वी, आकाश, बत्रिशूल, नाग आदि मिसाइलों के सफल प्रक्षेपण से एक नया नाम रू शमिसाइल मैनश दिया गया। वहीं डॉ. कलाम की जीवन शैली और विचारधारा विभिन्न विषयों पर उनकी विचारधारा रोशनी दृष्टि से एक नई मिसाल के रूप में हमारे समझ आकड़ी प्रस्तुत करती है।

मुख्य शब्द– शैक्षिक, दर्शन, डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम, मिसइलमैन, चिंतन।

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का जीवन दर्शनः– डॉ. कलाम के शिक्षा दर्शन को समझने से पहले उनके जीवन दर्शन को समझा जाये, क्योंकि शिक्षा तथा समान पर चिंतन करने वाले अनेक विचारको में डॉ ए.पी. जे. के अब्दुल कलाम के गहन विचार अपने सम्पूर्ण विश्व में प्रासंगिक है। उनका सम्पूर्ण जीवन पूरी तरह अनुशासन का पालन करते हुये गुजरा।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

वह जीवन की चुनौतियों को हताशा के रूप में स्वीकार करने की अपेक्षा स्वयं को और सशक्त बनाने के माध्यम के रूप में अपनाने चाहिये की बात कहते थे ।

डॉ कलाम के अनुसार –

जीवन की कठिनाइयाँ हमे बबर्बाद करने वहीं,
बल्कि यह हमारी छुपी हुयी सामर्थ्य और शक्तियों
को बाहर निकालती है निकालने में हमारी मदद
करती है, कठिनाइयों को यह जान लेने दो कि
आप उससे भी ज्यादा कठिन हो।

डॉ. कलाम सभी मुद्धों को मानवीयता की कसौरी पर परखते थे उनके लिये जाति धर्म वर्ग समुदाय मायने नहीं रखते थे। वे सर्वधर्म सदभाव के प्रत्यक्ष उदाहरण थे। वे इनसान को ऊंचा उठाना चाहते थे । उसे बेहतरी की ओर ले जाना चाहते थे । उनका मानवतावाद मनुष्यों की समानता के आधारभूत सिद्धांत पर आधारित था। जब–जब देश में प्राकृतिक आपदायें आयीं । तब–तब डॉ० कलाम की मानवीयता व करुणा निखरकर सामने आई है। अन्य मनुष्यों के कष्ट व पीड़ा के विचार मात्र से वह दुखी हो जाते। जब वह रक्षा, अनुसंधान तथा विकास संगठन में कार्यरत थे तो उन्होंनें हर राष्ट्रीय आपदा में विभाग की ओर से बढ़–चढ़कर राहत कोष में मदद की।

उनके जीवन की जो सबसे ज्यादा सजग आकर्षक बात थी वह भी था उनका सादगीपूर्ण जीवत वेशभूषा बोलचाल के लहजे, अच्छे खासे सरकारी आवास को छोड़कर होस्टल का सादगीपूर्ण जीवत उनके जीवन में संपर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति पर सम्मोहक प्रभाव छोड़ता है।

डॉ. कलाम एक वैज्ञानिक ही नहीं अपितु बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। विज्ञान प्रौद्योगिकी, देश विकास और युवा मस्तिष्कों को प्रज्जवलित करते में अपनी तल्लीनता के साथ–साथ वह पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति भी थे। साहित्य में रुचि रखते हुये वे कविता लिखते, वीणा बजाते थे तथा अध्यात्म से भी जुडे हुये थे।

कलाम का डॉ. ए.पी. जी कलाम की शैक्षिक विचारुव युवाओं के पथप्रदर्शक:– कलामजी ने शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके अनुसार शिक्षा वह माध्यम है जिससे मदित प्रगति के शिखर पर शिरोमणि बन जाता है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति सफलता पाताह और सिर्फ अपने परिवार ही नहीं बल्कि समाज को भी शिक्षित बनाने में मदद करता है। शिक्षित व्यक्ति समाज को सुधारक बनाता है, कलाम जी ने शिक्षा के माध्यम से हजारों–लाखों छात्र–छात्राओं को प्रेरित किया। उन्होंने विभिन्न विद्यालयों, यूनीवर्सिटी समिनारों में जाकर शिक्षा को बढ़ावा दिया। उन्होंने लक्ष्यहीन छात्र–छात्राओं को जीवत के लक्ष्य से अवगत कराया।

कलाम जी के अनुसार शिक्षा वह माध्यम है जो आज के बच्चे को कल का महान व प्रेरणास्रोत नेता बनाता है, उसे जिम्मेदारियों से अवगत कराता है। शिक्षा व्यक्ति का **''तुम मेरे लिए क्या कर सकते हो"? से "मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?"** का अंतर समझाती है।

शिक्षित व्यक्ति संसार में सम्मानजनक माना जाता है। **'शिक्षा' 'सुन्दरता'** से बड़ी है अर्थात् सुंदर व्यक्ति अशिक्षित होने पर भी संसार में अपना सम्मानजनक स्थान नहीं बनापाता परन्तु शिक्षित व्यक्ति सुंदर होने पर भी वाह–वाहि का पात्र बन जाता है।

डॉ. ए. पी० जे अब्दुल कलाम बच्चों से बहुत अधिक स्नेह रखते थे तथा वे हमेशा देश के भ्रमण के दौरान बच्चों से विशेष रूप से भेट करते उनके विचारों को सुनते तथा देश के युवाओं को मार्गदर्शन करते । डॉ० कलाम के शैक्षिक विचार एवं युवाओं के लिये कुछ संदेश इस प्रकार है–

1. उनके अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों मे निमार्ण की क्षमतायें पैदा करना है व ये समतायें शिक्षा संस्थाओं के ध्येय से पैदा होती है तथा शिक्षकों के अनुभव से सुदृढ होती हैं। अतः शिक्षण संस्थाओं में छात्रों में सृजनात्मकता का विकास करना चाहिये ।
2. कलाम जी का मानना था कि बचपन में दी गयी शिक्षा ही उनके सारे जीवन का आधार बन जाती है, इसके लिये उन्होने अपना उदाहरण देते हुये कहा कि वे बचपन से ही अपने गुरु अय्यर जी से अव्यधित प्रभावित थे कक्षा 5 में उनके गुरु अय्यर जी ने उनकी

   कक्षा के सभी बच्चों की कक्षा में पक्षियों के उड़ने की क्रिया समझने के साथ ही उन सभी को समुद्र तट पर बुलाकर पक्षियों को उड़ते हुए भी दिखाया था। इसका उनके जीवन पर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा जो कि आगे चलकर आने वाले समय में एक रॉकेट इंजीनियर, एयरोस्पेस इंजीनियर तथा प्रौधो की वेता के रूप में उनका जीवन रूपांतरित करने में सहायक हुआ।
3. कलाम जी में अभिप्रेरणा को बहुत महत्वपूर्ण मानते थे। वे कहते थे कि बच्चों को कृत्रिम सुख की बजाय ठोस उपलब्धियों के पीछे समर्पित रहना चाहिये। इसके लिये आवश्यक है कि छात्रों को अपने कठिन लक्ष्यों तक पहुंचने के लिये स्वयं को अभिप्रेरित करते रहें। इसके लिये उन्होंने छात्रों को निर्देशित किया कि उन्हें प्रत्येक सुबह खुद से निम्नलिखित 5 पंक्तियाँ कहनी चाहिये।
   - मैं सर्व श्रेष्ठ हूँ।
   - मैं कर सकता हूँ।
   - भगवान सदैव मेरे साथ है।
   - मैं विजेता हूँ।

- आज का दिन मेरा है।

4. शिक्षा में सामाजिक व नैतिक मूल्यों का प्रशिक्षण वह महत्वपूर्ण मानते थे। उनका कहना था कि–

''आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते, पर अपनी आदतें तो बदल सकते हैं व बदलती हुई आदतें आपका भविष्य बदल देंगी।''

उपर्युक्त कथन से यह प्रेरणा मिलती है कि सफलता प्राप्त करने के लिये व्यक्ति को बुरी आदतें छोड़कर अच्छी आदतों को अपनाना चाहिये। अच्छी आदतों से व्यक्ति समाज के लोगों को अच्छा सिखाता है व जीवन में सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है

5. शिक्षण प्रक्रिया में प्रश्नोत्तर प्रणाली को वह विशेष महत्व देते थे उन्होने कहा **''स्टूडेंटस से सवाल जरूर पूछने चाहिये। यह उनका सबसे बड़ा गुण है।''**

अतः शिक्षक को कक्षा का वातावरण इस प्रकार का बनाना चाहिये कि शिक्षार्थी बिना किसी संकोच के शिक्षक से प्रश्न कर सके तथा शिक्षक को भी मित्र की भांति उनकी समस्याओं का निवारण करना चाहिये, स्वयं कलाम जी अपने विभिन्न संस्थाओं में भ्रमण के दौरान विशेष रूप से बच्चों एवं युवाओं के प्रश्नों का उत्तर देते थे।

6. कलाम जी ने अपना पूरा जीवन संयमित व अनुशासन में गुजारा तथा छात्र जीवन में अनुशासन के महत्व को स्वीकार किया । परन्तु वे दमनात्मक अनुशासन व शारीरिक दण्ड के रूप में अनुशासन के विरोधी थे। प्रभावात्मक व मुक्तयात्मक अनुशासन के मिश्रित रूप को स्वीकरते हुये वे दिखावे के अनुशासन का विरोध करते थे। तथा छात्रों में अनुशासन लाने के लिये अध्यापक का व्यवहार संयमित व अनुशासित होना चाहिये ऐसा मानते थे।
7. कलाम जी के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो छात्रों को सफल भविष्य के सपने दिखाये और उनको पूरा करने की क्षमता उसमें पैदा करे। कलाम जी के अनुसार –

''सपना, सपना–––––– स्थानान्तरित होता है सोच में और सोच का परिणाम होता है कार्य''

8. डॉ. कलाम ने अध्ययन के तरीके से भी विद्यार्थी को अवगत कराया उनके अनुसार पाठ को रटने के स्थान पर समझने का प्रयास करना चाहिये तथा मुख्य महत्वपूर्ण बिन्दुओं को याद करना चाहिये। आज के बदलते परिवेश में वास्तविक ज्ञानार्जन के लिए अपनी बुद्धि और विवेक का यथोचित उपयोग करना होगा। साथ ही बौद्धिक क्षमता के विकास के लिए शारीरिक व्यायाम और खेल कूद भी परम आवश्यक है।

इस प्रकार डॉ कलाम प्रयोगवादी, शिक्षाविद् तथा दार्शनिक थे जोकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली को अपनाने तथा की बात करते थे। वर्तमान एवं भविष्य में डो कलाम के विचार सदैव प्रासंगिक रहेगें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पूर्वराष्ट्रपति अब्दुल कलाम का निधन, ''वी० वी० सी० हिन्दी 28 जुलाई 2015.
2- http://www-outlookindia-com/article/Kalama md&islam/216493
3- http://www-viganprasar-gov-in/scientists/bdulkalam/abdulkalanh-htm
4- httpill pib-nic-in/ profils/apjak-asp
5. http://www-livehindustan-com/news/nattaullrticlechildren&and&youth wore&popular & In the Kalam&4888465-html- अभियान तिथि 28 जुलाई 2015.
6. कलाम ए.पी. जे अब्दुल और राजन वाई. एस. (2005) मिशन इण्डिया, इन्डिया. पेंग्ऊईन बुक्स इन्डिया लिमिटेड।
7. गुप्ता प्रशांत (2013) विज्ञडम ऑफ कलाम, नई दिल्ली, ओसीन पेपरबैक कॉलोनस पब्लिशर्स।
8. कलाम ए.पी.जे (2005)रू द लाइफ ट्री इण्डिया, पेन्गुइन बुक्स इन्डिया प्राइवेट लिमिटेड ।